Page No.
Date

(1)

B.A. (Hons) Part I
Philosophy - Paper I
Topic जैन दर्शन का द्रव्य संबंधी विचार

Dr. Sachidanand Prasad.
Department of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

जैन दर्शन के अनुसार वस्तुओं के अनेक गुण होते हैं जिसमें कुछ गुण स्वार्थ होते हैं और कुछ गुण अस्वार्थ होते हैं। जैन दर्शन के अनुसार स्वार्थ गुण वह है जो वस्तुओं में निरन्तर रहते हैं और अस्वार्थ गुण वह है जो निरन्तर परिवर्तित होते रहते हैं। स्वार्थ गुण वस्तु के स्वरूप को बतलाते हैं इसलिए इन्हे आवश्यक गुण भी कहते हैं और अस्वार्थ गुण के अभाव में भी वस्तु की कल्पना की जा सकती है इसलिए इन्हे अनावश्यक गुण कहा जाता है उदाहरण के लिए मनुष्य का आवश्यक गुण चेतना है और सुख-दुःख कल्पना इत्यादि मनुष्य के अनावश्यक गुण हैं। इन गुणों का कुछ न कुछ आधार होता है जैन दर्शन में उस आधार को ही "द्रव्य" कहा जाता है।

Page No.
Date

②

जैन दर्शन मे आवश्यक गुण को जो वस्तु के स्वरूप को निश्चित करता है "गुण" कहते है तथा अनावश्यक गुण को 'पर्याय' कहते है। जैन दर्शन मे द्रव्य की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि- "गुण-पर्यायवद द्रव्यम्।" अर्थात जिसमे गुण और पर्याय हो वही द्रव्य है। जैन दर्शन के द्वारा द्रव्य की जो व्याख्या की गई है वह द्रव्य की साधारण व्याख्या से भिन्न है क्योकि द्रव्य की साधारण व्याख्या के अनुसार आवश्यक गुणो के आधार को द्रव्य कहा जाता है लेकिन जैन दर्शन मे आवश्यक और अनावश्यक गुणो के आधार को द्रव्य कहा जाता है। इसी विशेषता के कारण जैन दर्शन मे नित्यता और अनित्यता दोनो को सत्य माना गया है।

जैन दर्शन मे द्रव्य का विभाजन दो वर्गो मे किया गया है।

① अस्तिकाय
② अनस्तिकाय

जैन दर्शन के अनुसार 'काल' ही एक ऐसा द्रव्य है जिसमे 'विस्तार' नही है। 'काल' के अतिरिक्त सभी द्रव्यो को 'अस्तिकाय' कहा जाता है, क्योकि वे स्थान घेरते है।

3

अस्तिकाय द्रव्य का विभाजन "जीव" और अजीव मे होता है।

जैन दर्शन जीव की सत्ता मे विश्वास करता है। जैन दर्शन मे जीव की परिभाषा देते हुए कहा गया है "चेतन द्रव्य" को जीव कहते है क्योकि चेतना जीव का प्रमुख लक्षण है जो जीव मे सदैव विद्यमान रहती है। चेतना के अभाव मे जीव की कल्पना नही की जा सकती है। जैन दर्शन के अनुसार जीव, ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता इत्यादि है। जैन दर्शन के अनुसार अजीव चार प्रकार के होते है। धर्म, अधर्म, पुदगल और आकाश। जैन दर्शन के अनुसार साधारणत: जिसे जड़ (Matter) कहा जाता है उसे पुदगल कहा जाता है। भौतिक द्रव्यों को पुदगल कहा जाता है। अर्थात जिसका संयोजन और विभाजन हो सके वही पुदगल है। जैन दर्शन मे धर्म और अधर्म का प्रयोग विशेष अर्थ मे किया गया है। वस्तुओं को चलायमान रखने के लिए सहायक द्रव्य की आवश्यकता होती है। गति के लिए जिस सहायक वस्तु की आवश्यकता होती है, उसे धर्म कहा जाता है।

जैन दर्शन के अनुसार अधर्म, धर्म का प्रतिलोम है। किसी वस्तु को स्थिर रखने में जो सहायक होता है उसे अधर्म कहा जाता है।

जैन दर्शन के अनुसार आकाश उसे कहा जाता है जो धर्म, अधर्म, जीव और पुद्गल जैसे अस्तिकाय द्रव्यों को स्थान देता है। आकाश अदृश्य है जिसका ज्ञान अनुमान से प्राप्त होता है। विस्तार युक्त द्रव्यों को रहने के लिए स्थान चाहिए और आकाश ही विस्तार युक्त द्रव्यों को स्थान देता है। आकाश दो प्रकार का होता है — लोकाकाश और अलोकाकाश। लोकाकाश में जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म निवास करते हैं। अलोकाकाश जगत के बाहर है।

काल को अनास्तिकाय कहा जाता है क्योंकि वह स्थान नहीं घेरता है। द्रव्यों के परिणाम और क्रियाशीलता की व्याख्या काल के द्वारा ही संभव होती है। काल दो प्रकार का होता है- पारमार्थिक काल और व्यवहारिक काल। घंटा, मिनट इत्यादि पारमार्थिक काल है व्यवहारिक काल को ही हम समय कहते हैं।